



अरिहंत परमात्मा की उपासना का उपाय

अरिहंत परमात्मा की आराधना चार निक्षेप द्वारा हम कर सकते हैं, ऐसा उल्लेख ललितविरतरा, प्रतिमा शतक, आवश्यक सूत्र, अनुयोगद्वार सूत्र, विशेषावश्यक भाष्य आदि अनेक ग्रन्थों में मिलता है।

नाम, स्थापना, द्रव्य एवं भाव इन चार निक्षेपों द्वारा जगत के जीवों को पवित्र करनेवाले, सर्व क्षेत्र एवं सर्व काल में होनेवाले अरिहंतों की हम उपासना करते हैं।

इन चार निक्षेप में प्रथम है — नाम निक्षेप। जिसका विशेष स्वरूप हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। एक निक्षेप की विशेषता जानकर शेष निक्षेपों की विशेषता आप जान सकते हो या जानने की विशेष जिज्ञासा प्रगट हो सकती है। प्रथम तीन निक्षेप साधन रूप हैं, चतुर्थ निक्षेप साध्य रूप है। भाव जिन में एकाकार होने के लिये नामादि निक्षेप आवश्यक माध्यम है। अतः उसका आलम्बन लेकर हम अरिहंतमय बनने का प्रयास करेंगे।

नाम निक्षेप की स्पष्टता, यथार्थ बोध शास्त्रों के आधार से जानकर अरिहंत परमात्मा की उपासना कर धन्य बने।

